Seventeenth Loksabha

an>

Title: The Defence Minister appealed to all Leaders and Members of various Political Parties to maintain the sanctity of Motion of Thanks on President's Address and thereafter, initiate the discussion on it as per the past convention. Thereupon, the Speaker made an observation.

माननीय अध्यक्ष : माननीय राज नाथ सिंह जी ।

रक्षा मंत्री (**श्री राज नाथ सिंह**): महोदय, धन्यवाद ।

महोदय, यह सारा सदन इस बात से अवगत है, यदि जनरल इलेक्शन होता है तो जनरल इलेक्शन के बाद सामान्यत: जब भी संसद की सिटिंग होती है तो संसद के दोनों सदनों को राष्ट्रपति महोदय संयुक्त रूप से संबोधित करते हैं और यदि जनरल इलेक्शन नहीं होता है तो नए वर्ष में, प्रारम्भ में जो पहला सत्र होता है, संसद के दोनों सदनों को राष्ट्रपति महोदय संबोधित करते हैं । उसके बाद राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर दोनों सदनों में चर्चा होती है और एक धन्यवाद प्रस्ताव पारित होता है । धन्यवाद प्रस्ताव पारित इसलिए किया जाता है ताकि ये दोनों सदन राष्ट्रपति महोदय के प्रति यह कृतज्ञता ज्ञापित कर सकें कि आपने दोनों सदनों को संबोधित किया है । यह हेल्दी ट्रेडिशन है । यह प्रारम्भ से ही चला आ रहा है । ऐसी एक संवैधानिक व्यवस्था है ।

महोदय, आप जानते हैं कि जो पार्लियामेंट की परिभाषा है, संसद के दोनों सदनों के अतिरिक्त राष्ट्रपति भी उसमें शामिल हैं । चाहे किसी की भी राजनीतिक दल की गवर्नमेंट रही हो, यदि राष्ट्रपति के अभिभाषण के बाद पहला कोई काम हुआ है तो वह धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा हुई है और बराबर दोनों सदनों ने अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है । इस बार संसद के दोनों सदनों को राष्ट्रपति महोदय ने संबोधित किया । उसके बाद आपने देखा कि उच्च सदन, राज्य सभा में एक लंबी चर्चा भी हुई और आदरणीय प्रधान मंत्री जी के द्वारा उसका उत्तर भी दिया गया है और सर्वसम्मत राज्य सभा ने धन्यवाद ज्ञापित किया है ।

मैं सभी सम्मानित सदस्यों से विनम्रता पूर्वक अनुरोध करना चाहता हूँ कि डेमोक्रेसी का यह जो हेल्दी और लाइव ट्रेडिशन है, इसको बनाकर रखना किसी एक पॉलिटिकल पार्टी की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि मैं समझता हूँ कि चाहे कोई किसी भी पॉलिटिकल पार्टी का क्यों न हो, यह सबकी एक जिम्मेदारी बनती है कि इस स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्परा को हम बनाकर रखें । मैं जानता हूँ कि हेल्दी डेमोक्रेसी हमारी कंट्री में है, हमारी डेमोक्रेसी बहुत ही जीवंत है, सभी इसको बनाकर रखना चाहते हैं और दलगत भावना से ऊपर उठकर इसको बनाकर रखना चाहते हैं । व्यक्तिगत स्तर पर भी जब हमारी किसी भी दल के नेता से बातचीत होती है तो मैं देखता हूँ कि उनके दिल की भी यह चाहत होती है कि हेल्दी डेमोक्रेसी में ट्रेडिशंस नहीं टूटने चाहिए । इंस्टीट्यूशंस यानी जो संस्थाएं होती हैं, उन संस्थाओं की भी अवमानना किसी भी सूरत में नहीं होनी चाहिए ।

महोदय, आप भी इंस्टीट्यूशन हैं, राष्ट्रपति महोदय भी इंस्टीट्यूशन हैं, उपराष्ट्रपति महोदय भी इंस्टीट्यूशन हैं, बहुत सारे ऐसे हैं, यह इंडिविजुअल नहीं है, यह व्यक्ति नहीं है, बल्कि ये संस्था हैं और इस संस्था की गरिमा को बनाए रखना हम सभी सदस्यों की जिम्मेदारी बनती है ।

महोदय, आज मैं यहाँ पर इसीलिए खड़ा हुआ हूँ, क्योंकि राज्य सभा ने राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा करके एक आभार ज्ञापित कर दिया है । हम क्यों पीछे रहें? मैं तहे दिल से सबसे हाथ जोड़कर बहुत ही विनम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि इस ट्रेडिशन को हम किसी भी सूरत में टूटने न दें । अध्यक्ष महोदय, यह मैं अपील करना चाहता हूं, न टूटने दें । हमको जो बोलना है, जैसा भी बोलना है, हम चर्चा के दौरान अपनी बात को उसमें रखें । इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी ।

अध्यक्ष महोदय, यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप किसको कितना समय देते हैं, यह आपका प्रेरोगेटिव है । लेकिन मैं चाहूंगा कि लोग जितना समय चाहते हैं, आप समय दें । लोग बोलें, अपनी बात को खुल कर सदन के सामने रखें । एग्रीकल्चर बिल पर बोलना चाहते हैं, एग्रीकल्चर बिल पर बोलें । इसमें कोई आपत्ति नहीं है । लेकिन जो हमारी एक स्वस्थ परम्परा है, उसको हम सभी लोग मिलकर कायम रखें । यह मैं अनुरोध करना चाहता हूं । इसलिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया जा रहा है, उस पर चर्चा होनी चाहिए ।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्लीज बैठिये । माननीय सदस्य आपको मौका नहीं मिलेगा । आप बैठ जाइये ।

…(<u>व्यवधान</u>)

श्री राज नाथ सिंह : भगवंत मान जी, ठीक है ।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप माननीय सदस्य हैं । आपको कब बोलना चाहिए, यह ध्यान रखिये । आप बैठिये । मंत्री जी, आप अपनी बात रखें ।

श्री राज नाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सभी दलों के सम्मानित नेताओं से विनम्र अनुरोध करना चाहता हूं कि कृपया राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण से संबंधित जो धन्यवाद प्रस्ताव है, उस पर वह चर्चा प्रारम्भ करें और सर्वसम्मत उस धन्यवाद प्रस्ताव को पारित भी करें । इतना निवेदन करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष : श्री अधीर रंजन चौधरी ।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): सर, धन्यवाद । हमारे बुजुर्ग नेता राजनाथ सिंह जी ने जो बात रखी है, कद्दावर नेता है, हमारे डिप्टी लीडर है और क्या चाहिए ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपसे सलाह लेने नहीं आएंगे । आपसे वरिष्ठ हैं । आप बैठे-बैठे मत बोलिए ।

श्री अधीर रंजन चौधरी : बड़े सज्जन नेता हैं और कुछ चाहिए । राजनाथ सिंह जी बात यह है, हम जानते हैं कि हमारे राष्ट्रपति जी देश के लिए एक इंस्टीट्यूशन है इसलिए हम कहते हैं कि हैड ऑफ स्टेट राष्ट्रपति जी होते हैं । यह परम्परा आज से नहीं है, अगर हम इतिहास के पन्नों को खोलने की कोशिश करें तो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1919 की बदौलत वर्ष 1921 में हम सबसे पहले सेंट्रल लेजिस्लेचर बने थे मतलब 100 सालों से यह परम्परा चल रही है । हम लोगों ने ब्रिटिश हुकूमत के समय देखा, आज़ादी के समय भी देख रहे हैं । हमारे देश ने कभी परम्परा को टूटने नहीं दिया है । लेकिन हमारी माँओं और हमारे अंदर जो खौफ है, वह सिर्फ हमारे लिए नहीं, जहां हिन्दुस्तान के किसानों ने हमें और आप सब को खिला कर, पढ़ा कर हमारी जिंदगी को बचाने की कोशिश की हैं, कर रहे हैं और करते रहेंगे, उन किसानों की बदहाली और बर्बादी देखते हुए हम चुप्पी साधे नहीं बैठ सकते और कुछ नहीं है । जब हम देखते हैं कि राजधानी दिल्ली की सीमाओं पर लाखों की तादाद में किसान खुले आसमान तले बैठे हैं, कंपकंपाती ठंड के मौसम

में, बारिश के चलते उनका बिस्तर भी गीला हो जाता है और लगभग 206 किसानों ने जान गंवाई है । किसानों को रोकने के लिए लोहे की कीलें और कंटीले तारों के बैरीकेड लगाए गए हैं ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप राष्ट्रपति के अभिभाषण में अपनी बात कह देना ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, बात यह है कि हमें लगा कि यह सदन और आप खुद कहते हैं कि आप किसान के बेटे हैं । हम जरूर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा करेंगे । राष्ट्रपति जी ने दोनों सदनों को सम्बोधित किया है तो उनके प्रति हम सम्मान की कोई कमी नहीं करेंगे । लेकिन हमारी माँग क्या थी, कोई ज्यादा माँग नहीं थी । हमारी माँग थी कि राष्ट्रपति जी ने जो जॉइंट पार्लियामेंट सेशन को सम्बोधित किया था, मोशन ऑफ थैंक्स के तुरंत बाद अलग से किसानों के विषय पर चर्चा हो । दूसरा कुछ विषय नहीं था । हमारा और कोई मकसद नहीं था । हमारा मकसद यह था कि हिन्दुस्तान के किसान को हमारी पार्लियामेंट सही ढंग से सम्मान प्रदान करे, उनको श्रद्धा प्रदान करे । हम उनसे पूछें कि आपको क्या तकलीफ हो रही है? आप किस हालात से गुजर रहे हैं? इन सब बातों को रखने के लिए ही राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा के उपरांत किसानों के मुद्दे पर अलग से चर्चा हो, यही हम लोग चाहते थे । लेकिन हमारी बात बाहर नहीं जा पाती है, क्योंकि टीवी वाले हमारी बात नहीं दिखा पाते हैं । सदन के अंदर क्या हो रहा है, यह किसी को देखने को नहीं मिलता है । इससे कुछ लोगों को, खास तौर से सरकारी पक्ष को यह मौका मिल जाता है कि लोगों को गुमराह करो, बरगलाने की कोशिश करो और तरह-तरह की बातें करो । इससे ज्यादा हमारी कोई मांग नहीं थी कि किसानों का सम्मान व्यक्त करने के लिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर मोशन ऑफ थैंक्स के उपरांत अलग से दो-चार घंटे की किसानों के मुद्दे पर चर्चा हो । आप इस पर भी सहमत नहीं हुए तो हमने दूसरी मांग रखी थी कि बजट के बाद और रिसेस के पहले हमें बोलने का मौका दिया जाए । लेकिन हमने क्या देखा कि बहुमत के बाहुबल से सारी बातों को दबा दिया गया । इसीलिए बार-बार हम लोग यह गुहार लगाते आए हैं कि किसी भी हालत में हमें चर्चा का मौका दिया जाए, क्योंकि यह हमारी व्यक्तिगत मांग नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तान के किसानों का पक्ष रखने के लिए ही हम

अलग से चर्चा चाहते थे । बात यह है कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान केवल किसान के ही नहीं, अपितु भिन्न-भिन्न मुद्दों पर यहां चर्चा होती है । इसलिए इससे अलग एक स्टेंडअलोन चर्चा हम किसानों के मुद्दे पर चाहते थे । हमारा किसान भाग्यविधाता है, अन्नदाता है, उनके प्रति सम्मान दिखाने के लिए हम लोगों ने यह मांगी की थी और यह मांग करते रहेंगे ।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैं सदन के उपनेता और रक्षा मंत्री, श्री राज नाथ सिंह जी को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने सरकार की तरफ से सभी लोगों से सदन चलाने का आग्रह किया है । मेरा भी लगातार प्रयास रहा है कि सदन चलना चाहिए । आज भी चर्चा हुई और सभी दलों के नेताओं ने सर्वसम्मति से सदन चलाने का आग्रह स्वीकार किया । मेरी कोशिश रहती है कि सदन चले, चर्चा हो, संवाद हो, विचार-विमर्श हो और इस मंथन से जो निकले, उससे देश का कल्याण हो । लेकिन मुझे दुख होता है कि कई बार आग्रह करने के बाद भी माननीय सदस्य वेल में आ जाते हैं, नारेबाजी करते हैं और कई माननीय सदस्य तो सदन की गरिमा भी नहीं रखते हैं और सदन के नेता जब बोल रहे होते हैं तो बीच में खड़े होकर बोलने लग जाते हैं । यह संसद की अच्छी परम्परा नहीं है । मैं आप सभी लोगों से आग्रह करूंगा कि सदन हमेशा चलना चाहिए, चर्चा होनी चाहिए । आप लोग कभी भी कोई विषय रखना चाहते हैं तो मैं आपको पर्याप्त समय और अवसर प्रदान करता हूं ताकि सदन में कभी अवरोध उत्पन्न न हो, क्योंकि देश की जनता चाहती है कि यह सदन चले और हमारे मुद्दे इस सदन के माध्यम से माननीय सदस्य उठाएं । आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद ।